कही ईसुरी फाग

मैत्रेयी पुष्पा

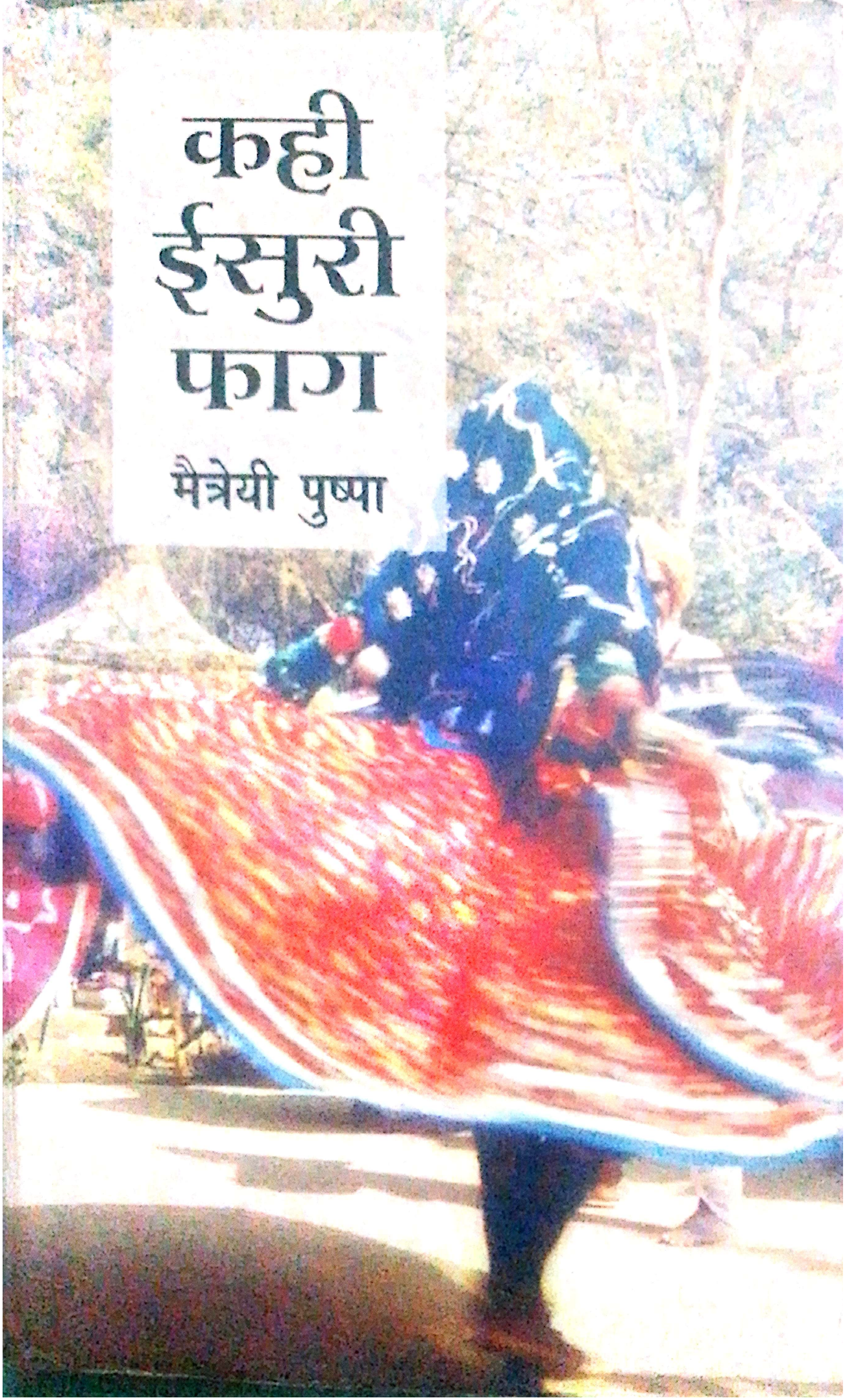

Scanned with OKEN Scanner

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता।

मूल्य : 295 रुपए

© मैत्रेयी पुष्पा

पहला संस्करण : 2004

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

आवरण-छाया : सर्वेश

KAHI ISURI FAAG
(Novel) *by* Maitrayee Pushpa

ISBN : 81-267-0883-2

Scanned with OKEN Scanner

रामायण तुलसी कही
सूरदास ज्यों राग
ऐसे ही कलिकालि में
कही ईसुरी फाग

Scanned with OKEN Scanner

मैत्रेयी पुष्पा

जन्म : 30 नवंबर 1944, अलीगढ़ ज़िले के सिकुर्रा गाँव में।

आरंभिक जीवन : ज़िला झाँसी के खिल्ली गाँव में।

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी साहित्य), बुंदेलखंड कॉलेज, झाँसी।

प्रकाशित रचनाएँ

कहानी-संग्रह : चिन्हार, गोमा हँसती है, ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ।

उपन्यास : बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूला नट, अल्मा कबूतरी, अगनपाखी, विजन।

आत्मकथा : कस्तूरी कुंडल बसै।

स्त्री विमर्श : खुली खिड़कियाँ।

फैसला कहानी पर टेलीफिल्म : वसुमती की चिट्ठी।

सम्मान : सार्क लिट्रेरी अवार्ड।

'द हंगर प्रोजेक्ट' (पंचायती राज) का सरोजिनी नायडू पुरस्कार एवं अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : सी-8, सेक्टर-19, नोएडा 201301 (उ.प्र.)।

Scanned with OKEN Scanner

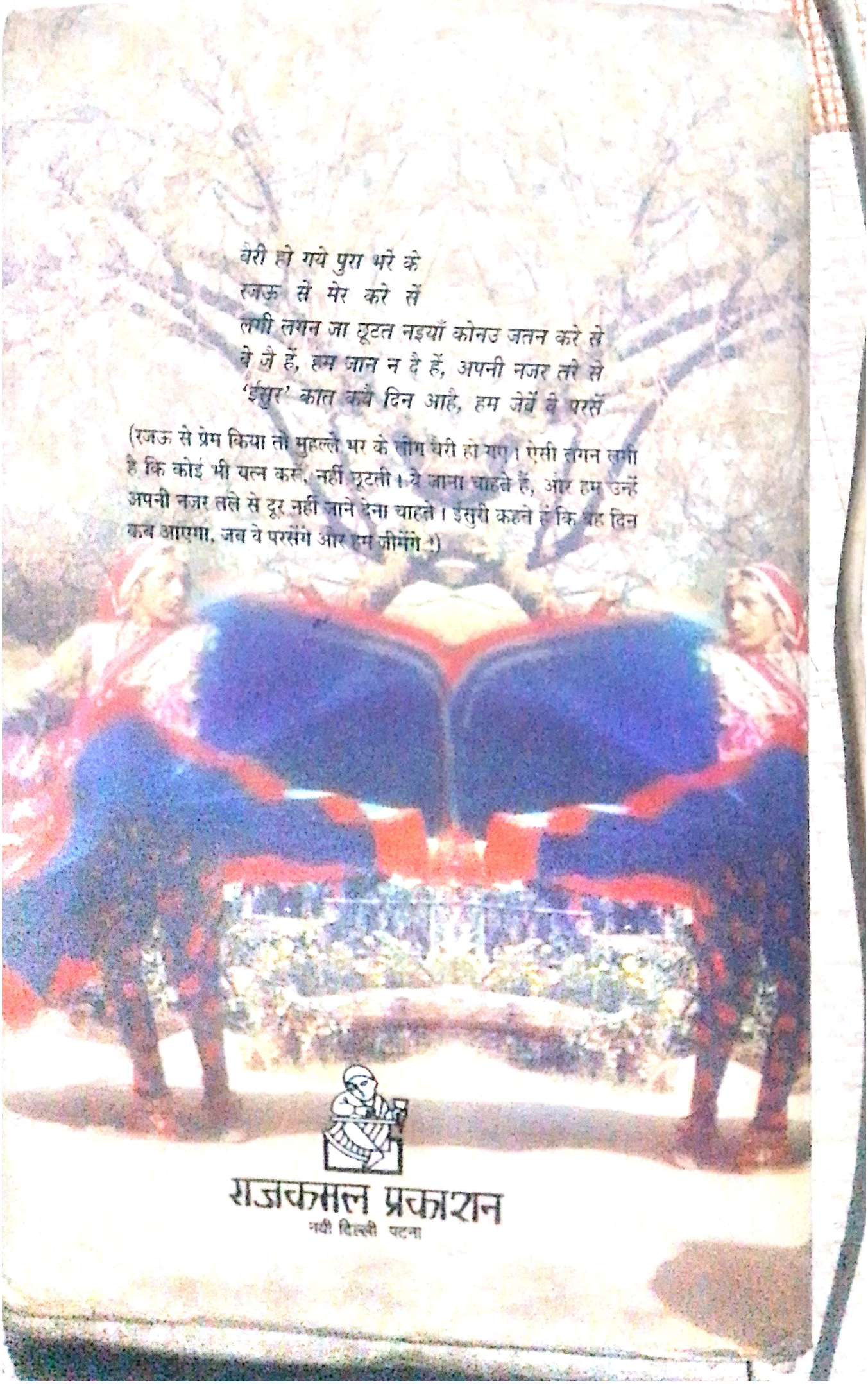

बैरी हो गये पुरा भरे के
रजऊ से मेर करे सें
लगी लगन जा छूटत नइयाँ कोनउ जतन करे से
वे जै हैं, हम जान न दै हैं, अपनी नजर तरे से
'ईसुर' कात कबै दिन आहै, हम जेवें वे परसें

(रजऊ से प्रेम किया तो मुहल्ले भर के लोग बैरी हो गए। ऐसी लगन लगी है कि कोई भी यत्न करें, नहीं छूटती। वे जाना चाहते हैं, और हम उन्हें अपनी नजर तले से दूर नहीं जाने देना चाहते। ईसुरी कहते हैं कि वह दिन कब आएगा, जब वे परसेंगे और हम जीमेंगे।)

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना